

हाजियों की दिनचर्या

[हिन्दी – Hindi – هندی]

अब्दुल्लाह बिन अहमद अल्लाफ

अनुवाद: अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2012 - 1433

IslamHouse.com

يوميات الحجاج

« باللغة الهندية »

عبد الله بن أحمد العلاف

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2012 - 1433

IslamHouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا،
وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान करदे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

हाजियों की दिनचर्या

①

यौमुत् तरवियह (जुल-हिज्जा की आठवीं तारीख) के काम

- जुल-हिज्जा के आठवें दिन को यौमुत् तर्विह कहा जाता है ; क्योंकि हाजी लोग इस दिन आने वाले

दिनों के लिए पानी ले लेत थे। तथा इसके अलावा इसका अन्य कारण भी उल्लेख किया गया है।

- हज्ज तमत्तुअ करनेवाले के लिए मुसतहब है कि स्नान और सफाई व सुथराई करे, फिर एहराम के कपड़े (सफेद चादर और तहबंद) पहन ले। जबकि औरत "निकाब और दस्ताने" के अलावा जो कपड़े चाहे पहन सकती है।
- हज्ज तमत्तुअ करने वाला एहराम की नीयत में दाखिल हो यानी हज्ज की इबादत में प्रवेश करने की नीयत करे। रही बात हज्ज किरान और इफ़ाद करने वाले की तो वह पहले से ही एहराम की हालत में है।
- ज़ोर से हज्ज का तलबियह पुकारें और कहें : लब्बैका हज्जन्।
- किसी रुकावट के पेश आने की संभावना है तो शर्त लगाना मुसतहब है, चुनाँचे वह कहे :

"وَإِنْ حَبَسَنِي حَابِسٌ فَمَجِّئِي حَيْثُ حَبَسْتَنِي"

(व—इन हबसनी हाबिसुन फ—महिल्ली हैसो हबस्—तनी)
अर्थात् यदि मुझे कोई रुकावट पेश आ गई, तो मैं वहीं हलाल हो जाऊँगा जहाँ तू मुझे रोक दे।

- एहराम की हालत में निषिद्ध सभी चीज़ों से बचना।
- अधिक से अधिक तलबियह पढ़ना:

"لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ
وَالنَّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لَا شَرِيكَ لَكَ"

(लब्बैका, अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैका ला शरीका लका
लब्बैक, इन्नल हम्दा वन्नेमता लका वल मुल्क, ला
शरीका लक)

- 10 जुल—हिज्जा के दिन जम्रतुल अकबा को कंकरी मारने तक निरंतरता के साथ ऊँचे स्वर में तल्बियह पढ़ते रहें।
- तल्बियह पढ़ते हुए मिना के लिए रवाना हों (यदि आप पहले से वहाँ नहीं हैं)।
- मिना में ठहरे रहना और वहाँ जुहर, अस्त्र, मग़िब, इशा और नौ जुलहिज्जा (अरफा के दिन) की फज़ की नमाज़ पढ़ना।
- हर नमाज़ को उसके समय पर पढ़ना और चार रक्अत वाली नमाज़ों को क़स्र करके दो रक्अत पढ़ना। तथा फज़ की सुन्नत और वित्र की पाबंदी करना क्योंकि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इनकी पाबंदी किया करते थे।
- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित मसनून दुआओं की पाबंदी करना।
- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण करते हुए इस रात को मिना में बिताना।

- अपने समय को अल्लाह के ज़िक्र, तिलावत और जिन बातों की जानकारी नहीं है उनके बारे में विद्वानों से पूछने में व्यस्त रखना।
- एहराम का कपड़ा दोनों कंधों पर होना चाहिए, और इज़्तिबा करना (यानी दायें कंधे को खोल कर रखना) केवल तवाफ कुदूम में धर्मसंगत है।
- ऐसे वादविवाद (बहस) और बात चीत से बचना जिनका कोई लाभ नहीं है।
- नौ जुलहिज्जा की फज़ की नमाज़ पढ़ने तक मिना में ही रहना और बिना किसी ज़रूरत के इससे पहले अरफा न जाना।

2

अरफा के दिन (जुल-हिज्जा की नवीं तारीख) के काम :

- फज़ की नमाज़ पढ़ने और सूरज उदय होने के बाद, आप तल्बियह और तक्बीर "अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, ला इलाहा इल्लल्लाह, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, वलिल्लाहिल हम्द" कहते हुए अरफा जाएं, आप तल्बियह और तक्बीर में अपनी आवाज़ ऊँची रखें।
- यदि संभव है तो सूरज ढलने तक नमिरा में पड़ाव करना, नहीं तो पूरा अरफा ठहरने की जगह है।

- अरफा में बने रहना और जुहर के समय में जुहर और अस्त्र की नमाज़ क़स्र के साथ पढ़ना।
- यदि आपके लिए इमाम के साथ नमाज़ पढ़ना आसान नहीं है, तो इसी तरह आप अकेले या अपने आस पास के लोगों के साथ नमाज़ पढ़ें।
- अधिक से अधिक दुआ और तह्लील (ला इलाहा इल्लल्लाह) करना, क्योंकि सबसे बेहतरीन दुआ अरफा की दुआ है, जैसा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है : “मैं ने और अन्य पैग़म्बरों ने अरफा की शाम जो सर्वश्रेष्ठ बात कही वह यह है :

"لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك وله الحمد، وهو على كل شيء قدير."

“अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा माबूद (पूज्य) नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसी के लिए बादशाही और उसी के लिए सभी प्रशंसा है, और वह हर चीज़ पर कादिर (सर्वशक्तिमान) है।”

- नमाज़ से फारिग होने के बाद, अपने दोनों हाथों को उठा कर क़िब्ला की ओर मुँह करके ज़िक्र और दुआ में व्यस्त हो जाएं।
- अरफा में ठहरने वाले व्यक्ति के लिए सुन्नत यह है कि वह इस दिन रोज़ा न रखे।

अरफात से प्रस्थान करना :

- सूरज डूब जाने के बाद इतमिनान और सुकून के साथ मुज़दलिफा की ओर रवाना हों, स्वयं या चौपाये या गाड़ी के द्वारा लोगों के रास्ते न तंग करें, अगर आप खाली रास्ता पायें तो तेज़ी से जायें।
- मुज़दलिफा पहुँचकर अज़ान दी जाए और इक़ामत कहकर तीन रकअत मगरिब की नमाज़ पढ़ी जाए, फिर इक़ामत कहकर क़स्र के साथ इशा की नमाज़ पढ़ी जाए।
- उन दोनों नमाज़ों के बीच और इशा के बाद कोई नमाज़ नहीं पढ़ी जायेगी।
- वहाँ फ़ज़्र तक रात बिताई जायेगी।
- जब फ़ज़्र उदय हो जाए तो अज़ान और इक़ामत के साथ प्रथम समय में उसकी नमाज़ पढ़ी जायेगी।
- असक्षम लोगों, कमज़ोरों और महिलाओं के लिए आधी रात या चाँद के डूबने के बाद मिना के लिए प्रस्थान करना जायज़ है।

3

यौमुन्नहर (10 जुल-हिज्जा) के काम :

- मुज़दलिफा में फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ने के बाद मशअरे हराम (जो कि मुज़दलिफा में एक पहाड़ी है) के पास

जाना और किब्ला की ओर मुँह करके दुआ करना, जि़क्र करना, अल्लाह की प्रशंसा व गुणगान करना, तहलील (यानी ला इलाहा इल्लल्लाह) और तक्बीर कहना यहाँ तक कि अच्छी तरह रौशनी हो जाए।

- पूरा मुज़दलिफा ठहरने की जगह है, अतः आप जहाँ भी ठहर जाएं, जायज़ है।
- तल्बियह कहते हुए शांति और इतमिनान के साथ मिना की ओर प्रस्थान करें।
- वादी मुहस्सर में पहुँचने पर यथासंभव तेज़ी से चलें।
- रास्ते से या मिना से सात कंकरियाँ चुन लें।
- मिना पहुँच कर जमरतुल अक़बा जायें, वह सबसे अंतिम और मक्का से सबसे निकट का जमरह है। जमरह की ओर मुँह करें और मक्का आपके बायें और मिना आपके दायें हो।
- एक के बाद एक जमरह को सात कंकरियाँ मारें और हर कंकरी के साथ तक्बीर कहें।
- सूरज निकलने के बाद ही जमरह को कंकरी मारी जायेगी और सूरज ढलने के बाद मारना जायज़ है।
- कंकरी मारने के साथ ही तल्बिया बंद कर दिया जायेगा।
- यदि आपके पास हदी (कुर्बानी) का जानवर है तो उसकी कुर्बानी करें, कुर्बानी का समय चार दिन है :

ईद का दिन (जिसे हज्जे अकबर का दिन कहते हैं) और तशरीक के तीन दिन यानी जुलहिज्जा का ग्यारहवाँ, बारहवाँ और तेरहवाँ दिन।

- सिर के बाल मुँडाएं या कटवायें, और इसी के साथ आपको प्रथम तहल्लुल प्राप्त हो जायेगा और आपके लिए औरतों के अलावा एहराम की हालत में निषिद्ध सभी चीजें हलाल हो जायेंगी।

मक्का की ओर रवाना होना :

- हाजी मक्का रवाना हो और काबा का तवाफे इफाज़ा यानी हज्ज का तवाफ करें।
- उसके बाद यदि आसानी है तो मक़ामे इब्राहीम के पास या मस्जिदुल हराम में किसी भी जगह तवाफ की दो रकअतें पढ़ें।
- यदि आप हज्ज तमत्तुअ करने वाले हैं, तो सफा व मर्वा के बीच हज्ज की सई करें, इसी तरह यदि आप तमत्तुअ करने वाले नहीं हैं और तवाफे कुदूम के साथ सई नहीं की है, तो (अब) सई करेंगे।
- इसी पर आपको दूसरा तहल्लुल प्राप्त हो जायेगा (अर्थात आप संपूर्ण रूप से एहराम की पाबंदी से आज़ाद हो जायेंगे) और एहराम की हालत में निषिद्ध सभी चीजें यहाँ तक औरतें भी हलाल हो जायेंगी।
- ज़मज़म का पानी पियें, “जिस चीज़ के लिए भी ज़मज़म पिया जाए उसके लिए लाभप्रद है।”

- जुहर और अस्त्र की नमाज़ या जितना भी आसान हो मस्जिदुल हराम में नमाज़ पढ़ें।
- मिना वापस आना और उसमें ग्यारहवीं जुलहिज्जा की रात बिताना।
- सुन्नत यह है कि हज्ज के कामों में अनुक्रम का पालन किया जाए : कंकरी मारना, फिर कुर्बानी करना, फिर सिर के बाल मुँडाना, फिर तवाफ़ इफाज़ा करना, फिर हज्ज तमत्तुअ करने वाले का सर्ई करना। लेकिन अगर इन में से किसी चीज़ को पहले या बाद में कर दिया जाए तो उसके लिए जायज़ है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बारे में फरमाया है : “इसमें कोई आपत्ति की बात नहीं . . इसमें कोई आपत्ति नहीं”।

4

तररीक़ के पहले दिन (ग्यारहवीं जुल-हिज्जा) के काम

:

- मिना में रात बिताना और जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है, और बेहतर यह है कि मस्जिदुल खैफ़ में नमाज़ पढ़ी जाए।
- नमाज़ के बाद मुक़ैयद तक्बीर कहना, तथा हर स्थिति, समय और स्थान पर सामान्य रूप से तक्बीर कहना सुन्नत है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

फरमाया : “तशरीक के दिन खाने, पीने, और अल्लाह तआला का जिक्र करने के लिए हैं।”

- सूरज ढलने के बाद हाजी तीनों जमरात को कंकरी मारेगा।
- छोटे जमरह से शुरूआत करेगा, हर कंकरी के साथ अल्लाहु अकबर कहते हुए उसे लगातार एक के बाद एक सात कंकरियाँ मारेगा।
- यदि हो सके तो कंकरी मारने के दौरान मक्का आपके बायीं ओर और मिना आपके दायीं ओर रहे।
- छोटे जमरह को कंकरी मारने से फारिग होने के बाद हाजी क़िब्ला की ओर मुँह करके लंबी देर तक दुआ के लिए ठहरेगा।
- बीच वाले जमरह के पास जाए और उसी तरह करे जिस तरह कि छोटे जमरह के पास किया था।
- बीच वाले जमरह को कंकरी मारने से फारिग होने के बाद क़िब्ला की ओर मुँह करके लंबी दुआ करे।
- उसके बाद जमरतुल अक़बह के पास जाए और उसे सात कंकरियाँ मारे जिस तरह कि पहले किया था।
- जमरतुल अक़बह को कंकरी मारने के बाद दुआ के लिए नहीं ठहरेगा।
- बारहवीं जुलहिज्जा की रात को मिना में बितायेगा।

- असक्ष व्यक्ति के लिए कंकरी मारने में तीन चीजें जायज़ हैं : 1—मिना में रात न बिताए। 2— दो दिनों की कंकरी एक दिन में मारे। 3—रात में कंकरी मारे।

5

तश्रीक के दूसरे दिन (बारहवीं जुलहिज्जा) के काम

- मिना में रात गुज़ारने के बाद, अपने समय को नेक कार्य करने, अल्लाह का ज़िक्र करने, लोगों के साथ एहसान व भलाई करने, एक दूसरे की खैरखाही करने और भलाई की वसीयत करने में लगाना।
- ठीक ग्यारहवीं जुलहिज्ज की तरह जुहर के बाद तीनों जमरात को कंकरी मारी जायेगी। और छोटे तथा बीच वाले जमरह के बाद दुआ के लिए ठहरना।

जो व्यक्ति दो दिनों में ही जल्दी प्रस्थान करना चाहे :

- जो व्यक्ति प्रस्थान (यात्रा) करने में जल्दी करना चाहे तो यह धर्मसंगत है और उसके ऊपर अनिवार्य है कि वह सूरज डूबने से पहले मिना से प्रस्थान कर जाए।
- विदाई तवाफ करने के लिए मक्का जाए। अल्लाह तआला का फरमान है कि :

﴿فمن تعجل في يومين فلا إثم عليه﴾ [البقرة: 203]

“जिसने जल्दी की दो दिनों में तो उसके ऊपर कोई गुनाह नहीं।” (सूरतुल बकरा : 203)

6

तरीक के तीसरे दिन (तेरहवीं जुलहिज्जा) के काम

(यह उस व्यक्ति के लिए विशिष्ट है जो विलंब करना चाहे)

- मिना में रात गुज़ारने के बाद ठीक पिछले दो दिनों के समान काम किया जायेग।
- तीनों जमरात को कंकरी मारी जायेगी।
- छोटे तथा बीच वाले जमरह को कंकरी मारने के बाद दुआ की जायेगी।
- इसके बाद मक्का जायेगा और यात्रा करने के समय विदाई तवाफ करेगा। पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : “तुम में से कोई प्रस्थान न करे यहाँ तक कि उसका अन्तिम काम खाना-काबा का तवाफ हो जाए।”